अप्रतिमानता :- [राबर्ट के. मर्टन]

सामाजिक विचलन के समाजशास्त्रीय विश्लेषण में नियमहीनता के प्रत्यय का प्रमुख योगदान रहा है। एनोमी का सर्वप्रथम प्रयोग और विश्लेषण करने का श्रेय इमाइल दुर्खीम को है। आधुनिक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में एनामी के विश्लेषण को दुर्खीम की परम्परा से अलग हटकर विश्लेषित करने का श्रेय सुप्रसिद्ध अमेरिकी समाजशास्त्री राबर्ट के० मर्टन को है।

दुर्खीम के अनुसार अप्रतिमानता का अर्थ है मानदंड विहीनता अर्थात नियमन में कमी। दूसरे शब्दों में जब किसी समाज में नियम विधि इत्यादि का प्रभाव क्षीण हो जाता है तो ऐसी सामाजिक दशा को अप्रतिमानता कहा जाता है, दुर्खीम ने अप्रतिमानता का विश्लेषण दो संदर्भों में किया।

A - अप्रतिमानित श्रम विभाजन

B - अप्रतिमानित आत्महत्या

दुर्खीम का बल इस बात पर है कि जब भी किसी समाज में नियमों प्रतिमानों मूल्यों, मानदंडों इत्यादि के प्रभाव में कमी आती है जो कि सामान्यतया तीव्र आर्थिक विकास या अवनति के दौर में, राजनीतिक अस्थायित्व एवं महयुद्ध के दौर में उद्दीपमान होती है। ऐसे समाज में मूल्य, आदर्श प्रतिमान अपना प्रभाव खो देते हैं यह अप्रतिमानता की दशा एक तरफ तो संघर्ष विचलन, हिंसा पैदा करती है तो दूसरी ओर आत्महत्या की दर में वृद्धि करती है। इस प्रकार दुर्खीम ने अप्रतिमानित दशा को विचलन का एक प्रमुख कारक माना।

मर्टन ने दुर्खीम से प्रभावित होते हुये लेकिन साथ ही साथ दुर्खीम का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते हुये अप्रतिमानता को न केवल सामाजिक माना बल्कि व्यक्ति के व्यवहारों को अप्रतिमानता कहा। अर्थात उसके लिये अप्रतिमानता एक दशा भी है और व्यवहार करने का एक स्वरूप भी है।

मर्टन विचलनकारी व्यवहारों का कारण व्यक्ति के शारीरिक या मनोवैज्ञानिक दशाओं में नहीं ढूंढता, बल्कि सामाजिक संरचना में ढूंढता है। मर्टन का यह विशेष योगदान है कि विचलनकारी व्यवहारों का दायित्व उसने सामाजिक संरचना पर रखा है। मर्टन से पहले कुछ विद्वानों ने व्यक्ति के अंदर कुछ ऐसे मनोवैज्ञानिक स्रोत खोजने का प्रयास किया है कि जिनसे मनोवैज्ञानिक क्रियाओं की व्याख्या हो सके जैसे फ्रायड की Libido Theory आदि। लेकिन मर्टन ने इसके विपरीत सामाजिक संरचना के अवसरों को विचलनकारी व्यवहार के लिये जिम्मेदार ठहराया।

Scanned with CamScanner

मर्टन ने विचलनकारी व्यवहार या अप्रतिमानता की व्याख्या करने के लिये सामाजिक संरचना के दो अंगों की पहचान करते है।

A – संस्कृति द्वारा परिभाषित लक्ष्य

B – लक्ष्यों को प्राप्त करने के स्वीकृत साधन

मर्टन का कहना है कि प्रत्येक संस्कृति में सदस्यों के लिये कुछ लक्ष्य निर्धारित होते है तथा इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये स्वीकृत साधन भी होते है। आधुनिक समाज में सफलता के लक्ष्य पर अत्यधिक महत्व दिया जाता है पर इनको प्राप्त करने के प्रत्येक तरीके को समाज मान्यता नहीं देता मर्टन ने सामाजिक संरचना में एक संतुलन बिंदु की बात की है। अर्थात संस्कृति द्वारा परिभाषित लक्ष्यों को संस्थागत साधनों द्वारा प्राप्त करने की स्थिति ही संतुलन की स्थिति है।

मर्टन ने अपना यह अध्ययन अमेरिकी समाज को दृष्टिगत रखते हुये किया उनका कथन है कि असंतुलन उत्पन्न करने का दायित्व समाज व संस्कृति पर होता है। मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त के अनुसार समाज के जनसंख्या के एक भाग द्वारा सांस्कृतिक लक्ष्य प्राप्त करने के लिये नैतिक आचरण न करने की स्थिति आदर्श-शून्यता कहलाती है। मर्टन ने अपने सिद्धान्त को निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया है।

मर्टन द्वारा प्रस्तुत सिद्धान्त एक विशिष्ट सिद्धान्त है सामान्यीकृत नहीं। मर्टन ने अमेरिकी समाज के आर्थिक व्यवहारों को महत्ता प्रदान की है। अमेरिकी समाज में वर्ग सहभागिता एवं सामाजिक वर्ग महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। मर्टन ने दुर्खीम के सिद्धान्त को तो अपनाया परंतु उसी रूप में नहीं। उनका कहना है कि दुर्खीम के ये सिद्धान्त या विचार वर्तमान आधुनिक समाज मे उपयुक्त प्रतीत नहीं होते है। मर्टन व्यक्ति को अपने अध्ययन की इकाई मानते है। मर्टन ने अपने एनोमी सम्बन्धी सिद्धान्त को स्पष्ट करने के लिये वैयक्तिक अनुकूलन का प्रारूप प्रस्तुत किया जो निम्नांकित है।

अनुकूलन के प्रकार	सांस्कृतिक लक्ष्य	संस्थागत साधन
1- अनुरूपता (conformity)	(+)	(+)
2- नवप्रवर्तन (INNOVATIVE)	(+)	(−)
3- कर्मकांडीयता (RituaListic)	(−)	(+)
4- प्रतिगामी (Retreatist)	(−)	(−)
5- विद्रोह (Rebellion)	(±)	(±)

Scanned with CamScanner

अनुरूपता - में व्यक्ति सांस्कृतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये संस्थागत साधनों का प्रयोग करता है। सांस्कृतिक लक्ष्य एवं संस्थागत साधन जितने ही अधिक उपलब्ध होंगे समंजनकारी व्यवहार उतने ही अधिक बढ़ेंगे। व विचलनकारी व्यवहार की संभावना उतनी ही अधिक घटेगी।

नव प्रवर्तन - में सांस्कृतिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये व्यक्ति नये ~~~~ साधनों को अपनाता है। इसके लिये व्यक्ति नकारात्मक साधनों को अपनाने से भी नहीं हिचकिचाते हैं। कुछ समाज सामूहिक सफलता तथा कुछ वैयक्तिक सफलता पर बल देते हैं। जो समाज या संस्कृति वैयक्तिक सफलता ~~~~ पर अधिक बल देते हैं उसमें विचलनकारी प्रवृत्तियों को अधिक बढ़ावा मिलता है। सफलता प्राप्त करने के लिये इतना अधिक बल दिया जाता है कि व्यक्ति इसे प्राप्त करने के लिये अनुचित साधनों का प्रयोग भी करने लगता है।

कर्मकांडीयता के अंतर्गत लोग संस्थागत साधनों को नहीं त्यागते परंतु सांस्कृतिक लक्ष्यों को छोड़ देते हैं। या तो ऐसे लोग असफलता से डरते हैं या प्रतियोगिता से घबराते हैं। अपने भय को ही दूर करने के लिये ये संस्थागत नियमों का ही पालन करते हैं। सिद्धान्त रूप में कहा जा सकता है कि जिस समाज में सफलता प्राप्त करने पर जितना अधिक बल दिया जायेगा वहाँ असफलता का भय उतना ही अधिक होगा।

प्रत्यावर्तन - प्रत्येक समाज में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो सांस्कृतिक लक्ष्य तथा संस्थागत साधन दोनों को ही त्याग देते हैं। ऐसे व्यक्ति समाज में उपेक्षित जीवन व्यतीत करते हैं। सिद्धान्त रूप में कहा जा सकता है कि जो लोग अनुचित साधनों का प्रयोग बिल्कुल नहीं करना चाहते और सफलता के सुअवसर नहीं पाते वे प्रतिगामी हो जाते हैं।

विद्रोह - अनुकूलन का पाँचवा प्रकार विद्रोह है। मर्टन ने आक्रोश एवं विद्रोह में अंतर स्पष्ट किया है। आक्रोश केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति है जबकि विद्रोह पुराने लक्ष्य और साधनों के स्थान पर नये लक्ष्य और साधन को स्थापित करने का दृढ़ संकल्प है। सिद्धांत रूप में यह कहा जाता है कि जहाँ सफलता से वंचित रहने वाले वैचारिकीय स्तर पर जितनी अधिक आलोचना करेंगे विद्रोह की संभावनायें उतनी ही अधिक होंगी।

Scanned with CamScanner

संक्षेप में मर्टन के सामाजिक विघटन सम्बंधी सैद्धान्तिक विचार निम्नांकित है।

A - विघटन आधुनिक समाजों की एक स्थायी विशेषता है।

B - विघटन को उत्पन्न करने के लिये सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना समान रूप से उत्तरदायी है।

C - विघटन का मूल स्रोत समाज में अप्रतिमानता की दशा है।

D - मध्यवर्ती समाजों में विघटन की संभावनायें अधिक होती है। क्योंकि इन समाजों में सांस्कृतिक समतावाद पर विशेष बल दिया जाता है।

E - स्तरीकरण तथा वर्ग व्यवस्था से सम्बद्ध समस्यायें समाज में विघटन को प्रबल करती है।

F - सामाजिक विघटन के प्रतिफल के रूप में व्यक्तिगत विघटन को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आलोचना

A - मर्टन का यह सिद्धान्त अमेरिकी समाज के संदर्भ में है। अन्य समाजों में यह लागू नहीं होता क्योंकि यह एक विशिष्ट सिद्धान्त है।

B - यहसिद्धान्त भारतीय समाज के संदर्भ में भी उपयुक्त नहीं हो सकता।

C - पारसंस की तरह मर्टन ने भी सामाजिक घटनाओं का गैर जरूरी वर्गीकरण किया है।

D - समायोजन का वर्गीकरण प्रसिद्ध जर्मन समाजशास्त्री मैक्सवेबर के आदर्श प्रतिरूप का प्रतिरूप ही प्रतीत होता है।

Scanned with CamScanner